प्रातः क्लास 16/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। मीठे-2 रूहानी बच्चो यह तो समझते हो कि हम देवताएँ बन रहे हैं। स्टूडेंट जो पढ़ते हैं उन्हों की बुद्धि में ज़रूर रहता है हम फलाना बनने लिए पढ़ते हैं। पहले-2 टीचर की ज़रूर याद आवेगी। तुम बच्चे भी टीचर को तो ज़रूर याद करते होंगे, जिन द्वारा तुम देवता बनते हो। उठते-बैठते-चलते स्टूडेंट को टीचर ज़रूर याद रहती है। यह है तुम्हारा अनुभव। तुम बच्चे यहाँ अनुभव सुनाते हो ना कि हम घर में जाते हैं वा सेंटर पर जाते हैं, हमको यह ज़रूर बुद्धि में रहता है कि हम देवता बन रहे हैं। हम स्टूडेंट बेहद के टीचर द्वारा पढ़ रहे हैं। टीचर भी याद है और उद्देश्य भी याद है। हम देवता बनने वाले हैं। कौन सा देवता? सो तो सिवाय इन ल॰ना॰ के चित्र के और कुछ भी तुमको याद नहीं आवेगा। और तो कोई ऐसा सुंदर चित्र है नहीं। पढ़ाने वाला शिवबाबा भी याद रहते हैं। क्या पढ़ाते हैं वह भी याद है; क्योंकि यह पढ़ाई है विचि(त्र) यह (ल॰ना॰) चित्र तो है नई दुनिया के। यह कोई इस दुनिया के नहीं हैं। इन देवताओं के आगे खुद मनुष्य जाकर माथा टेकते हैं कि यह देवताएँ थे। एमऑबजेक्ट का यह एक ही चित्र है। ल॰ना॰ या विष्णु। यह तो ज़रूर याद होगा हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। यह महाराजा-महारानी का चित्र है। और कोई चित्र नहीं, जिसमें एमऑबजेक्ट हो। और किसका चित्र है? सिवाय इन ल॰ना॰ के। तो तुम बच्चों की बुद्धि में यह ज़रूर रहना चाहिए बाबा हमको पढ़ाते हैं देवता बनाने लिए। सारा भारत तो क्या, सारी दुनिया में और कोई चित्र है नहीं। राम-सीता को भी वास्तव में तुम स्वर्ग के देवता नहीं कहेंगे। तुम्हारी एमऑबजेक्ट ही यह है, चित्र भी यह एक ही है जो तुम्हारे लिए रखा हुआ है। यह तो ज़रूर तुम्हारी बुद्धि में रहना चाहिए, कौन-सा देवी-देवता बनेंगे। चित्र तो ज़रूर चाहिए ना। यह चित्र है तुम्हारे आगे। और कोई एमऑबजेक्ट का चित्र है नहीं। बाप और यह वर्सा। शिवबाबा के बाद, दूसरा है यह (ल॰ना॰)। वह पढ़ाने वाला और यह पढ़ाई की रिज़ल्ट। यह भी तो बहुत सहज हो गया है। शिवबाबा को और वर्से को याद करना है। यह भी मन्मनाभव हो गया ना। देह के सभी धर्म त्याग एक बाप को याद करना है और मद्याजीभव। इसमें कोई डिफीकल्ट नहीं है। बाबा हमको नर से ना॰ बनाते हैं। यह देवताएँ हैं ना और कोई प्रजा आदि का भी चित्र है नहीं। ल॰ना॰ की डिनायस्टी है, जिसमें आठ जन्म लेते हैं। तो तुम कहेंगे हम इनके ही सूर्यवंशी वंशावली में आवेंगे। अपने घर में हो वा कहाँ भी हो अपन को सदैव स्टूडेंट समझो। बाबा हमारा टीचर है। एमऑबजेक्ट सदैव बुद्धि में रखनी है और साथ दैवीगुण भी धारण करनी है। तुम जानते हो आधा कल्प हम भक्ति मार्ग में हम इन्हों के दैवी स्वभाव का वर्णन करते आये हैं। आसुरी स्वभाव और दैवी स्वभाव का कॉन्ट्रास्ट भी अभी तुम जानते हो। आगे कहते थे हम नीच, पापी हैं। अभी तो समझते हो हमको फिर ऐसा बनना है। ऊँच ते ऊँच पढ़ाने वाला बाप मिला है। ऊँच ते ऊँच पद मिलता है। इनसे ऊँचा और कोई पद मिल नहीं सकता। भगवानुवाच भगवान खुद बैठ पढ़ाते हैं। कृष्ण को भगवान समझ याद नहीं करना है। पहले भगवान को याद करना है फिर कृष्ण को। शिवबाबा यह कृष्ण बनाते हैं। कृष्ण छोटेपन में प्रिंस है ना। ल॰ना॰ ही छोटेपन में राधे-कृष्ण थे। बच्चे जानते हैं यह वर्ल्ड प्रिंस था। सो अभी बेगर है। भारत डबल सिरताज था। अभी तो भारत कंगाल है। कृष्ण की राजाई नहीं कहा जाता। ल॰ना॰ की राजाई कहेंगे। अभी इस सारी पढ़ाई का मूल तंत क्या है? शिवबाबा को याद करना है। पढ़ाने वाला टीचर तो ज़रूर याद रहेगा ना। बच्चों को मालूम है यह हमारा बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है अर्थात् बेड़ा पार करने वाला है। एमऑबजेक्ट तो ज़रूर चाहिए ना। मनुष्य गुरु करते हैं, उनसे कोई पूछे हमको क्या मिलेगा? सन्यासी लोग कब बता न सकेंगे। वह तो यह राजयोग सीखते ही नहीं, न सिखला सकते हैं। निराकार बाप ही निराकारी बच्चों को अर्थात् आत्माओं को बैठ समझाते हैं। वह बाप तो एक ही है। तो बच्चों को बुद्धि में बाप को भी याद करना है और दैवीगुण भी धारण करनी है। हमारा बाबा ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। उनकी महिमा ही अलग है। देवताओं की महिमा अलग है। शिव के चित्र में भी उनकी महिमा लिखी हुई है

और कृष्ण के चित्र में भी महिमा लिखी हुई है। शिवबाबा है पढ़ाने वाला और वह है, जो भविष्य का पद मिलना है। भल बच्चे जानते हैं फिर भी निरंतर याद ज़रूर करना है; क्योंकि जन्म-जन्मांतर के पाप इस याद की यात्रा से ही कटनी है। तुम यह समझाते हो। फिर कोई माने न माने। किसको जोरी फांसी नहीं चढ़ाया जाता है। नहीं मानते हो, तुम्हारी मर्जी। यह तो तुम बच्चे समझते हो, बुद्धि में आना चाहिए धक्का खा खाकर फिर भी आवेंगे तो यहाँ ही। जावेंगे कहाँ। यह बेहद के माँ-बाप हैं। इनके पास आना ही है। भल कइयों की बुद्धि भटकती है, धारणा नहीं हो सकती है। हरेक को अपने में देखना है मैं क्या पुरुषार्थ करता हूँ। हमारे में क्या-2 खामियाँ हैं। दैवी चाल है? यह देवताएँ तो प्याज़ आदि नहीं खाते। इन पर तो फल-फूल ही भोग चढ़ाते हैं। यह सिगरेट आदि भी नहीं पीते। तुम्हारे में कोई है जो कब-कब सिगरेट आदि पीते हैं? अपने से पूछना चाहिए हमारी कोई आसुरी चलन तो नहीं है। देवताओं के तो सदैव गुण गाये जाते हैं। 63 जन्म नहीं गाया है। 50 जन्म कहेंगे; क्योंकि पहले तो सिर्फ एक शिवबाबा के ही गुण गाते हैं। अव्यभिचारी भक्ति होती है। फिर देवताओं की भक्ति शुरू करते हो। तो अपने दिल से पूछना चाहिए। ऐसी कोई अशुद्ध चीज़ न खानी चाहिए। पान में भी तम्बाकू न होना चाहिए। खुशबुएँ जैसी चीज़ें हों। बाबा को मालूम है बल्लभाचारियों पास बाप न मिलते हैं। बड़े ही फर्स्ट क्लास खुशबुएँदार मसाले वाले होते हैं। ल॰ना॰ के मंदिर में भी पान बहुत खुशबुएँदार चीज़ों का बना हुआ देते हैं। उसमें खुशबुएँ बहुत ही अच्छी होती है। उनका कोई हर्जा नहीं है। यह कोई खराब चीज़ें नहीं हैं। यह तो बिल्कुल साधारण बात है। यहाँ कई नये-2 भी आते हैं, सिगरेट अथवा शराब आदि पिया हुआ होता है तो उनकी झट बांस आदि आ जाती है। कोई-2 बड़े आदमी कहते हैं तो अलाउ किया जाता है। समझो, कोई बड़ा आदमी है, पूछता है—हम क्लास में आवें? उनको ऐसे थोड़े ही कहेंगे नहीं आओ। वह अच्छा फील नहीं करेगा। तो कोई नये-2 भी आते हैं बीड़ी वाले तो बांस रहती है। तो अपनी जांच करनी है हम ऐसी कोई अशुद्ध चीज़ अथवा तमोगुणी चीज़ तो नहीं खाते हैं। मूली की भी उगराई बड़ी छी-2 आती है। तो ऐसी-2 खटाई आदि की तमोगुणी चीज़ नहीं खानी चाहिए। देवताओं को शुद्ध चीज़ों का ही भोग लगाया जाता है। तुम जानते हो हम श्रीनाथ द्वारे में बड़ी शुद्ध और पक्की रसोई बनाते हैं और फिर जगतनाथ पुरी में जाओ तो वहाँ सिर्फ चावल ही बनते हैं। श्रीनाथ में चावल नहीं बनाते हैं। वह फिर कच्ची रसोई हो जावेगी। ऐसे नहीं कि सतयुग में चावल नहीं होंगे। सभी कुछ होगा। क्या-2 वहाँ होता है सो आगे चलकर देखेंगे। जितना-2 नज़दीक आते जावेंगे तो फिर सभी कुछ मालूम पड़ता जावेगा। बाबा कहते हैं बच्चे थोड़ा आगे बढ़ो तो बहुत सा॰ आदि होंगे। अभी तुमको सा॰ आदि होते रहते हैं ना। हम देवता बनते हैं। और कोई ऐसे बता न सके कि यह तुम्हारी एमऑबजेक्ट है। यह बनने की कौन सी पढ़ाई होती है, यह भी कोई नहीं जानते हैं। गीता में भल है; परंतु समझते थोड़े ही हैं। यह सभी बातें बाप ही आकर समझाते हैं। अभी तुम अच्छी रीत समझते हो। तुम बच्चे जब बैठते हो तो यह बुद्धि में रहना है हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। हमारे में कौन सी अवगुण है उसको निकालना है। जो हम बाप को याद नहीं करते हैं, यह है पहला-2 अवगुण। याद नहीं करेंगे तो हमारे पाप भी नहीं कटेंगे। मुख्य है ही याद की यात्रा, जिसमें ही माया के बहुत विघ्न पड़ते हैं। तूफान आते हैं। बाप कहते हैं भूलना नहीं है, हम स्टूडेंट हैं। हम पढ़ाई पढ़ने जाते हैं यह पद पाने लिए। तुम्हारा यह एमऑबजेक्ट बुद्धि में खड़ा है। आगे यह कुछ भी नहीं जानते थे। अभी समझते हो बाबा हमारा टीचर भी है। हाँ, बाप सम...ते थे। हम सभी ब्रदर्स हैं। वह हमारा बाप है। बाकी हम सभी को वह सद्गति देते हैं, यह भी नहीं समझते थे। भगवान फादर है, परमपिता है। जबकि उनको परमपिता कहते हो तो निराकार समझकर नहीं कहते हैं। बाप के तो बच्चे ज़रूर होंगे ना। तुम जानते हो वह परमआत्मा है। हम सभी आत्माएँ हैं। जो अच्छे-2 बच्चे हैं उन्हों को बुद्धि में तो यह ज़रूर आता होगा, मुख से कहते भी हैं हम सभी भाई-2 हैं। क्रिश्चयन हिन्दू भाई-2; परंतु अर्थ नहीं समझते हैं। मुख से जो कुछ कहते हैं उनका अर्थ नहीं समझते। हम भाई-2 हैं तो हमारा बाप भी ज़रूर चाहिए।

ऐसे बाप को फिर पत्थर-भित्तर में डाल दिया है तो बच्चों का क्या हाल होगा? बाप को पत्थर भित्तर में ठोक देने से खुद भी पत्थर बुद्धि बन गये हैं। यह दुर्गति हो जाती है, जो बाप ही आकर समझाते हैं। बाप को ही पार्ट मिला हुआ है बच्चों को पढ़ाने का। यह बातें कोई भी नहीं जानते हैं। घड़ी-2 भूल जाते हैं। यहाँ जब बच्चे आते हैं तो उन्हों को रिफ्रेश किया जाता है। नशा चढ़ता है, फिर घर में जाने से नम्बरवार नशा उतरता जाता है। फिर बहुत विकर्म कर देते हैं। बहुत हैं जो बाप को सच बताते ही नहीं। बहुत अच्छे-2 फर्स्टक्लास बच्चे भी बाप को सच्ची दिल की बात नहीं सुनाते। गरीब साधारण बच्चे झट अपने दिल ही(की) हाल बता देते हैं। महारथी बड़ा अहंकार में रहते हैं। अपन को होशियार समझते हैं तो वह इज्जत का अहंकार रहता है। अपनी जीवन कहानी लिखने से किवाते(दिलशिकस्त) हैं। पता नहीं कोई को दिखला देवें। यह अहंकार हुई ना। यह तो सभी जानते हैं अजामिल जैसे पापात्माएँ हैं। पूरे बंदर भी हम थे। यह भी तुम्हारे साथ पूरा अजामिल, पूरा सूरदास था। ज्ञान का नेत्र था नहीं। अंधे के औलाद अंधे गाया हुआ है ना; क्योंकि ज्ञान का नेत्र है नहीं। आत्मा ही ज्ञानी और अज्ञानी बनती है। बाप तो है ज्ञान का सागर। वही आकर आत्माओं को ज्ञानी बनाते हैं। अभी ज्ञान और अज्ञान में कितना फर्क है। अज्ञान(ी) को कहेंगे तमोप्रधान, ज्ञानी को कहेंगे सतोप्रधान। तमोप्रधान अज्ञानी को अपार दुःख, सतोप्रधान ज्ञानी को अपार सुख होते हैं। यह फर्क भी अभी तुम समझते हो। अच्छे-2 बच्चों के दिल पर रहता है। जो अपने बनने न हैं उनके लक्षण सुधरते ही नहीं। धारणा होती ही नहीं। मिसाल भी देते हैं सुरमंडल के स.... से.... सभी देहअंहकारी सांडे हैं। सांडे में अपना अहंकार बहुत होता है। बड़े-2 महारथी भी बड़े देहअंहकारी से बात करते हैं। अपन को बहुत ही होशियार समझते हैं। बापदादा के आगे भी अपना वह सांडापना दिखाते रहेंगे। अहंकार तो रहता है ना अपना। यहाँ तो बहुत मीठा बनना है। स्वभाव को बदलना है। मुख से सदैव रत्न निकलें। देही अभिमानी हैं तो रत्न निकलते हैं। देह अभिमानी से ज़रूर पत्थर ही निकलेंगे। इसलिए ड्रामा के प्लैन अनुसार स्थापना में समय लगता है। जब सांडापना निकल जाये तब वह अवस्था हो। टाइम लगता है। पहले नम्बर में है देह अभिमान। देहअभिमान में आने से ही फिर और विकार लगते हैं। बड़ा दुश्मन है देहअभिमान। काम विकार का तूफान भी देह अहंकार के कारण आता है। देहीअभिमानी बने तो काम के तूफान भी नहीं आवेंगे। इसलिए बाबा कहते हैं अपन को आत्मा समझो। आत्माभिमानी बनो। आत्मअभिमानी बनने लिए बाप बार-2 समझाते हैं बाबा सभी आत्माओं को मुक्तिधाम ले जावेंगे। जाना तो सभी को है। सभी का हिसाब-किताब चुक्तू होना है। जब तक हिसाब-किताब चुक्तू न हुआ है तब तक दुःख अशांति है। मुख्य बात है बाप को याद करना। रोज़-2 कितना समझाया जाता है फिर भी सांडेपना, देहअभिमान बड़ा मुश्किल टूटता है। यही महारोग है। मुश्किल आत्मअभिमानी बनते हैं। देहअभिमान छोड़ना बड़ा मुश्किल समझते हैं। देहीअभिमानी बनें तब काम पर जीत पा सकें। बंदर के आगे भल हाथी आवे, कोई बंदूक ले जाये, सामने खड़ा रहे तो भी गुरुर-2 ज़रूर करेंगे। यहाँ भी बच्चों में देहअभिमान इतना है जो शिवबाबा के आगे भी गुरुर-2 करते हैं। इसलिए बंदर और मनुष्य की सिकल भी एक जैसी बनाते हैं। अभी तुम समझते हो हम बरोबर बंदर थे। बल्कि बदतर थे। मनुष्य होकर और बंदर से भी बदतर बन जाते हैं। फिर बाप आकर मंदिर लायक देवता बनाते हैं। कमाल है ना! इसलिए बाप को जादूगर भी कहते हैं। बंदर बुद्धि को विश्व का मालिक बनाये देते हैं कमाल है ना! तुम जानते हो हम कितने पाप आदि किये हैं। अभी फिर ड्रामा के प्लैन अनुसार बाप आकर हमको सभी दुखों से छुड़ाते हैं। काँटों को फूल, जंगल को मंगल बनाते हैं। यह सारी दुनिया बेहद का जंगल है। फिर बेहद का मंगल कर देते हैं। तुम सारी दुनिया पर राज्य करते हो। तुम विश्व के मालिक बनते हो ना। अच्छा बाप कहते हैं जास्ती क्या सुनाऊँ। मन्मनाभव। सभी को यही बताते रहो कि बेहद के बाप को याद करो। बाप स्वर्ग की बादशाही देते हैं। बाप को याद करो तो स्वर्ग तुम्हारा है। मिलिट्री वालों को भी बाबा समझाते हैं तुमको हिंसा तो करनी ही है; परंतु स्वर्ग में जाने चाहते हो तो शिवबाबा को याद करो। कितने सिपाही तैयार होते हैं; क्योंकि उनको कहा जाता है युद्ध के मैदान में मरने से स्वर्ग में जावेंगे। बच्चों को समझाया बहुत जाता है; परंतु यहाँ का यहाँ ही भूल जाते हैं। अच्छा, ओम।